

'हेम संस्कृत प्रवेशिका मध्यमा' पाठ १ थी 13

प्र. १ नीचेना मटि धातुओं तथा शब्दों पूर्ण माहिली साथे लखी (गमे ते-10) 10 माक्स

(1) स्वभाव (7) [2] वीणबुं (6) [3] करडबुं (11) [4] समूह (12)

[5] कर्म (कर्मन विना) (16) [6] हांकबुं (नुद विना) (19) [7] मेघ (23) [8] जुहुं (अनृत विना) (57)

[9] चंचल (63) [10] स्वीकारलुं (73) [11] आसक्ति (73)

प्र. २ नीचेना स्थायी ओलखावी स्थायनिका करी अर्थ लखी (गमे ते-3) 3 माक्स

(1) उदुशति - (2) आवैः (3) अनुदुयुते (4) दुरुदैः

प्र. ३ (अ) नीचेना धातुना मांग्या प्रमाणे कर्तरि स्था लखी (गमे ते-4) 10 माक्स

(1) उाधि + इ - विर्यर्थ विना १ पु. (4) अनु + अज् - वि. विना २-3 पु.

(2) निस् + उद् + ईड् " " " (5) परि + उद् + इ - एक व. - बहु व.

(3) उद् + शिष् - 4 काल २ पु.

(ब) नीचेना धातुना मांग्या प्रमाणे कर्माणि रूपो लखी (गमे ते 4) 8 माक्स

(1) आ + शास् - व. आ. 3 पु. (4) सम + सो - आ. वि. १ पु.

(2) दुस् + वै - छ. वि. २ पु. (5) दुस् + धम् - व. छ. २ पु.

(3) उद् + र्स्मी - व. आ. १ पु.

(क) नीचेना धातुना कृदन्तना मांग्यानुसार रूपो लखी (गमे ते -4) 8 माक्स

(1) आधि + इ - व. कृ. पु. स्त्री. 6 थी 8

(2) अनु + ऋ (उ गण) व. कृ. न. पु. स्त्री. प्रथमा

(3) परि + आस् - व. कृ. स्त्री. न. 7-8

(4) आ + हन् - व. कृ. एकवचन

(5) परि + छौ - ऋति उव्ययान्त एकवचन

प्र. 4 (अ) नीचेना गुजराती वाक्योनु ससान्धि संस्कृत लखी 1/2 माक्स

(1) गुरु वैडे वरवाणाती (ईड्) सारी शिष्याओं वैडे इच्छता (वश) अभ्यासने पूर्ण करवा

मटि गुरुने भजता एवा संघ सेवकों वैडे घणो ज उयलन करायौ ।

(2) आबी पैडला पोताना दुःखोने विचारीने निःसासा नांरवती वैडे राजकन्याओ ए जागरण करी करीने

पोतानी आरवी शत व्यतीत करी (कृ + क्रियापद)

(3) नाशी जता^(धु) चोरोने पकडवा मटि तीव्र वेगधी जता (इ पथो गण) एवा राजसैनिकी रस्तामां

आवता (आ + इ) सर्वे वाहनोने उल्लंघीने वृक्षनी नीचे छुपाई गया (कृ + क्रि.)

[ब] सान्धि मुक्त करी गुजराती लखी 1/2 माक्स

(१) एकोना विशाति नार्थः स्नानार्थं सरयू गताः

एकौ व्याघ्रो भ्राक्षीतः विशातिः पुनरायाताः (1)

(२) अपायमहमहंसो धर्ममुपायमुपदेशान्मुनेः ।

(3) अद्यायभागा रियन्नहमनुशासनमणगारमाभि

उ. 5 नीचेना उन्नोना सुस्पष्ट जवाब आणे

13 मार्क्स

(1) शित् प्रत्यय लागवा छतां उधमना प कालमां विकरण प्रत्यय ब्यारे धतो नधी

ते जणावी कया वित् शित् प्रत्यय पर छतां गुण धतो नधी ते सदृष्टांत जणावो ।

(2) समान स्वरनी नियम लाग्या विना ह्रस्व स्वर दीर्घ ब्यारे धाय ते सदृष्टांत जणावी

कर्मणिना प्रत्यय पर छतां पुर्वना स्वरनी लोप ब्यारे धाय ते ते सदृष्टांत लखो ।

(3) न् नो आ ब्यारे धाय ते जणावी कया कित्- ङित् प्रत्यय पर छतां गुण धाय

ते सदृष्टांत लखो ।

(4) विद् ग- २ ना प कालमां कैटला रूप धाय तेनी संख्या लखी ङित्- ङित्

शिवायनां प्रत्यय पर छतां स्वरनी वृद्धि ब्यारे धाय ते जणावो ।

(5) व्हे प्रकारना द्विकर्मक धातुनी वाम्य रचनानी समजण बहारना दृष्टांत पूर्वक लखो

कुल 75 मार्क्स

जवाब:- उ. २ [१] उद् + कश् - व. कृ. स. एक व. [३] न धाय

[२] आ + विद् - छ. २ - उ पु. एक व. [४] दुर + उद् + २ - छ. २ पु.

उ. ५ (अ)

(1) गुरुणोऽयमानाम्भिः सुशीष्यामिरुश्यमानमभ्यासं पूरयितुम् मुक्तं सन्वादिभिः

संघसेवकैः भृशं प्रायत्यत (प्रयतितम्)

(2) आपतितानि स्वदुःखानि विचिन्त्य निःश्वसत्यौ राजकन्ये जागरणं कृत्वा कृत्वा

स्वस्याः आखिलां निशां व्यत्यैताम् (व्यतीतैवत्यौ)

(3) द्वातश्चोरान् गृहीतुं तीक्ष्णवेगेण ईयमाना राजसैनिका मार्गं आयान्ते सर्वयानानि

आतिक्रम्य वृक्षस्याधः अहनुवत (हनुताः)

[ब]

(2) मुनेः उपदेशात् अहं अहसः अपायम् धर्मम् उपायम् ।

(3) अद्य अनुशासनम् अणगारम् आभि रियत् अहं आगः आद्यम्